श्री रामशरण शास्त्री विरचित कौमुदीकथाकल्लोलिनी (पूर्वार्द्ध) का व्याकरणात्मक दृष्टि से समीक्षात्मक अध्ययन

संस्कृत विषय में पी.एच.डी. की उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की
प्रस्तावित रूपरेखा
(2017–18)

शोध निर्देशक

डॉ. अभिमन्यु
असि. प्रो., संस्कृत विभाग
कला संकाय

शोधार्थी

भूपेन्द्र कुमार गौतम
व्याकरणाचार्य
संस्कृत विभाग

विभागाध्यक्षा

प्रो0 (श्रीमती) अगम कुलश्रेष्ठ
संस्कृत विभाग, कला संकाय

संकाय प्रमुख

प्रो0 जे के वर्मा
कला संकाय

अध्ययन का क्षेत्र– संस्कृत व्याकरण

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट
(डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग, आगरा–282005

श्री रामशरण शास्त्री विरचित कौमुदीकथाकल्लोलिनी (पूर्वार्द्ध) का व्याकरणात्मक दृष्टि से समीक्षात्मक अध्ययन

व्याकरण भाषा की आत्मा है,व्याकरण शास्त्र का साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान है। व्याकरण वास्तव में भाषा का प्रतिबिम्ब है। व्याकरण किसी भी भाषा को सीखने में बड़ी कुशलता, सरलता और तीव्रता से सहायता करता है, क्योंकि भाषा की गति, जीवन और विकास की प्रक्रियाओं की व्याख्या व्याकरण के आधार पर ही हो सकती है। भाषा के सही रूप का दर्शन 'व्याकरण' के आधार पर ही सम्भव है। साहित्यकारों ने स्वयं स्वीकार किया है। प्रथमे विद्वांसः वैयाकरणः (आनन्दवर्धन)। साहित्य के प्रयोगों की प्रामाणिक पुष्टि व्याकरण के द्वारा ही सम्भव है। काव्य ग्रन्थों में कवि के भावानुरूप धात्वर्थ के प्रयोग का निश्चयात्मक ज्ञान व्याकरण के द्वारा ही सम्भव है तथा अलंकारों के यथार्थ ज्ञान के लिए भी व्याकरण का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है। साहित्य में व्युत्पत्तिपरक शब्द एवं शब्दार्थ का निश्चयात्मक बोध कराना भी व्याकरण का मुख्य उद्देश्य है। व्याकरण शब्दानुशासन ही नहीं अपितु जीवन का अर्थानुशासन भी है, जिसने संस्कृत को संस्कृत भाषा का रूप देकर पुष्ट किया। संस्कृत भाषा को छोड़कर अन्य किसी भाषा में व्याकरण का इतना सूक्ष्म और विस्तृत अध्ययन नहीं हुआ है। लेकिन शब्दों की रूपसिद्धि तथा प्रयोग का कार्य भी व्याकरण के द्वारा ही किया जा सकता है। साहित्य के सौन्दर्य को जानने के लिए व्याकरण का ज्ञान होना परमावश्यक है। प्रत्येक शब्द के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए व्याकरण की आवश्यकता हेगी। व्याकरण के विषय में 'वाक्यपदीयम्' में एक प्रशस्ति है।

तदद्वारमपवर्गस्य वाङ्.मलानां चिकित्सितम्।
पवित्रं सर्वविद्यानामधिविद्यं प्रकाशते।।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि व्याकरण के बिना साहित्य की रक्षा और स्थिति सम्भव नहीं है। साहित्य का आदितम रूप कथा साहित्य रहा है। कथाओं के माध्यम से हमें नैतिक, सामाजिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक जगत का ज्ञान सरलता और सुलभता से प्राप्त होता है। कथाओं के द्वारा हमें जीवन के उच्च आदर्शों के विषय में बताया जाता है कथाएँ हमें सदुपदेश करती हैं। कथाओं के द्वारा ज्ञान की पूर्ण वृद्धि की जा सकती है। कथा सभी को रुचिकर लगती

है, इसलिए कथा को पढ़कर व सुनकर पाठक आनन्दित हो उठता है। कथाओं से पाठक की कल्पना व तर्क शक्ति का विकास होता है, संज्ञान की वृद्धि होती है तथा चिन्तन मनन करने की क्षमता का विकास हाता है। कथा साहित्य के द्वारा भाषा के ज्ञान में अभिवृद्धि होती है, शब्द भण्डार में वृद्धि होती है। प्राचीन काल में कथाओं के माध्यम से ही पठन–पाठन होता था। कथाओं में समाज, व्यक्ति, मन, बुद्धि एवं हृदय सभी का भोज्य पदार्थ प्राप्त होता है। कहानी को पढ़कर व सुनकर सभी प्रकार की मनोवृत्तियाँ शान्त होती हैं। मानव जीवन की सम्पूर्ण अभिव्यक्ति कथा के माध्यम से की जा सकती है। कहानी के रोम–रोम में संजीवन रस होता है एक हृदय के भावों को दूसरे हृदय के भावों तक पहुचाने का कार्य कथा ही करती है।

संस्कृत वाङ्मय में दो प्रकार के काव्य उपलब्ध होते हैं। एक काव्य शास्त्र जो काव्य का नियमन करते हैं और दूसरा शास्त्र काव्य जो वस्तुतः किसी काव्य का नियमन तो नहीं करते किन्तु अपने काव्यात्मक कोमल पदावलियों से शास्त्र की सूक्ष्मता को सिखाने का प्रयास करते हैं दूसरे शब्दों में कहें तो इन ग्रन्थों में लक्ष्य और लक्षण का समुचित निदर्शन एकत्रैव दृष्टिगोचर होता है। एतादृश ग्रन्थों में प्रतिनिधि ग्रन्थ के रूप में भट्टिकाव्य, कौमुदीकथाकल्लोलिनी प्रमुख हैं। एकादश कल्लोलात्मक यह ग्रन्थ सिद्धान्तकौमुदी के आधार पर दो भागों में विभक्त है, पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध। पूर्वार्द्ध में पाँच प्रकरण हैं और उत्तरार्द्ध में छः प्रकरण हैं। विषय की विशदता को दृष्टिगत करते हुऐ मैंने प्रकृत ग्रन्थ के पूर्वार्द्ध प्रकरण को अपने शोध का विषय बनाया है। प्रकृत ग्रन्थ में कथासरित्सागर की कथाओं को आधार बनाकर, सरल और रोचक शैली का आश्रय लेकर व्याकरण सिद्धान्तकौमुदी के औणादिक प्रकरण को छोड़कर प्रायः समस्त प्रकरणों के उदाहरणों को प्रयोग किया है ये उदाहरण न केवल व्याकरण शास्त्र की सूक्ष्म बारीकियों का ज्ञान कराते हैं, अपितु विभिन्न व्यवहार में प्रयुक्त नाम, कला, संस्कृति, सभ्यता तथा इतिहास का भी बोध कराते हैं। कथाओं में परिबद्ध होने के कारण यह व्याकरण की क्लिष्टता तथा शुष्कता का बोध नहीं होने देता है और सरल रीति से व्याकरण ज्ञान कराने में समर्थ होता है। यद्यपि व्याकरण के पूर्वज्ञान के बिना इस ग्रन्थ के रहस्य को समझने में काठिन्य भी हो सकता है। मैं प्रकृत ग्रन्थ को शोध का विषय बनाकर यहाँ प्रयुक्त पदों की व्याकरणात्मक दृष्टि से विवेचना करूँगा।

प्राक्तन कार्य–सर्वेक्षण–

अनेक विद्वानों, विश्वविद्यालयों तथा संचार माध्यमों से अन्वेषण करने के उपरान्त मेरे संज्ञान में ''कौमुदीकथाकल्लोलिनी'' ग्रन्थ को आधार बनाकर अभी तक एकमात्र कार्य हुआ है जो निम्नलिखित है–

कथाकल्लोलिन्याःसमीक्षात्मकपरिशीलनम् इति, शर्मा, मिथिलेश कुमार, श्री रणवीर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ–शास्त्री नगर, जम्मू–1986

उपर्युक्त कार्य साहित्य को आधार बनाकर किया है तथा मेरा शोधकार्य व्याकरण को आधार बनाकर किया जायेगा। शोधार्थी वर्तमान समय में इस शोधकार्य की क्या उपादेयता है, इसका भी अध्ययन करेगा तथा साथ ही उत्तरवर्ती ग्रन्थों पर कौमुदीकथाकल्लोलिनी ग्रन्थ का क्या प्रभाव पड़ा है इसका भी अध्ययन करेगा।

प्रविधि–

शोध प्रबन्ध लिखते समय मुख्यतः विवेचनात्मक व गवेषणात्मक शैली का प्रयोग करूँगा।

विषय चयन का उद्देश्य–

व्याकरण में मेरी अत्यधिक रूचि है। व्याकरण के प्रयोगों को दर्शाते हुए साहित्यगत प्रयोग मुझे रुचिकर प्रतीत होते हैं। इसलिए व्याकरण की दुरूहता साहित्य के शब्द परिपाक रस में सुमधुर हो जिसे स्तनन्धय बालक भी सुग्राह्य कर ले अतः मैंने इस विषय का चयन किया है। दूसरे पाठकों की व्याकरण के प्रति रुचि बढ़ेगी व संस्कृत का संवर्धन व संरक्षण होगा। पाठकों के लिए इस ग्रन्थ में प्रयुक्त प्रयोगसरल हो जाएंगे तथा ग्रन्थ की क्लिष्टता न्यून हो जाएगी। जिससे पाठक सरलता से ग्रन्थ को समझ सकेंगे। अतः मैं कौमुदीकथाकल्लोलिनी के पूर्वार्द्ध में प्रयुक्त प्रयोगों का व्याकरणात्मक विवेचन करूँगा। व्याकरण के प्रयोग दुरूह व क्लिष्ट होते हैं। साधारण मतिबालक इसको ग्रहण करने में असमर्थ होते हैं, इसलिए श्री रामशरण शास्त्री जी ने कथाओं का आश्रय लेकर इस ग्रन्थ के द्वारा व्याकरण के प्रयोगों को सरल ढंग से समझाने का श्रमसाध्य प्रयास किया है। यह ग्रन्थ व्याकरण के क्लिष्ट प्रयोगों के कारण जनसामान्य के पठन के योग्य नहीं है अतः इसके प्रयोगों का विवेचन कर भाषा को सरल व सुग्राह्य बनाने का कार्य करूँगा और

साथ ही ग्रंथ पर पूर्ववर्ती और उत्तरवर्तीग्रंथकारों का क्या प्रभाव पड़ा है इसका भी अध्ययन करूँगा। शोधार्थी इस ग्रंथ के भाषा, व्याकरण, और साहित्यिक दृष्टि से क्या वैशिष्ट्य है इसका भी अध्ययन करेगा।

विद्वज्जनों से विनम्र निवेदन है कि शोधार्थी को प्रकृत शोध कार्य करने की अनुमति एवं मार्ग दर्शन प्रदान करें।

शोधार्थी प्रकृत विषय को निम्नलिखित अध्यायों में विभक्त करेगा।

श्री रामशरण शास्त्री विरचित

कौमुदीकथाकल्लोलिनी (पूर्वार्द्ध) का व्याकरणात्मक दृष्टि से समीक्षात्मक अध्ययन

अध्याय विभाजन

प्रथम अध्याय–कथा साहित्य का उद्भव एवं विकास।

(क) व्याकरणशास्त्र का उद्भव एवं विकास।

(ख) काव्यशास्त्र और शास्त्रकाव्य का स्वरूप एवं अन्तर।

(ग) प्रकृत ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार का परिचय।

द्वितीय अध्याय –सन्धि, समास स्वरूप विवेचन

(क) सन्धि– अर्थ, स्वरूप एवं वैशिष्ट्य।

(ख) समास–अर्थ, स्वरूप एवं वैशिष्ट्य।

(ग) अध्येय ग्रन्थ में प्रयुक्त स्वर सन्ध्यादि युक्त पदों का विवेचन।

(घ) अध्येय ग्रन्थ में प्रयुक्त अव्ययीभाव समासादि युक्त पदों का विवेचन।

तृतीय अध्याय–कारक स्वरूप विवेचन।

(क) कारक – अर्थ, स्वरूप एवं वैशिष्ट्य।

(ख) अध्येय ग्रन्थ में प्रयुक्त कर्ता, कर्म आदि कारकों का विवेचन।

चतुर्थ अध्याय –स्त्रीप्रत्यय, तद्धितप्रत्यय स्वरूप विवेचन ।

(क) स्त्रीप्रत्यय– अर्थ, स्वरूप एवं वैशिष्ट्य।

(ख) तद्धितप्रत्यय – अर्थ, स्वरूप एवं वैशिष्ट्य।

(ग) अध्येय ग्रन्थ में प्रयुक्त अकारान्त आदि स्त्री प्रत्यय युक्त पदों का विवेचन।

(घ) अध्येय ग्रन्थ में प्रयुक्त तद्धित प्रत्यय युक्त पदों का विवेचन।

पंचम अध्याय – कौमुदीकथाकल्लोलिनी का भाषा वैशिष्ट्य।

(क) भाषा विज्ञान की दृष्टि से।

(ख) साहित्यिक दृष्टि से।

(ग) व्याकरणिक प्रयोगों द्वारा अभिव्यक्ति सौन्दर्य।

षष्ठ अध्याय –कौमुदीकथाकल्लोलिनी पर पूर्ववर्ती ग्रन्थों का प्रभाव।

(क) पूर्ववर्ती प्रभाव।

(ख) उत्तरवर्ती प्रभाव।

(ग) ग्रन्थ का व्याकरणशास्त्र में योगदान।

उपसंहार–अध्ययन का निष्कर्ष तथा प्रासंगिकता

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. **अष्टाध्यायी–**(अनुवृत्ति–वृत्ति–उदाहरण–वार्त्तिक–गणपाठादि सूची संहिता)अभिमन्यु, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली 2011
2. **अनुसंधान परिचय–**पारसनाथ, अग्रवाल, लक्ष्मीनारायण, 1973
3. **आधुनिक शोध प्रणाली–**मिश्र, महेन्द्र कुमार, मार्क पब्लिशर्स, जयपुर, 2009
4. **आधुनिक काल का संस्कृत गद्य इतिहास–**शास्त्री, कलानाथ, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, 1995
5. **आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास**–उपाध्याय, बलदेव, उ0प्र0 संस्कृत संस्थान, लखनऊ, 2000 ई.(वि.सं. 2056)
6. **काशिका–**वेदालंकार, रघुवीर, चौखम्बा ओरियन्टालिया, दिल्ली, प्रथम भाग–2006, द्वितीय भाग–2010
7. **कौमुदीकथाकल्लोलिनी–**शास्त्री, रामशरण, चौखम्बा, वाराणसी, द्वितीय संस्करण–1989
8. **नीतिकथा का उद्भव एवं विकास**–कवठेकर,प्रभाकर नारायण
9. **महाभाष्यम् (प्रदीपोद्योतभासितम्)–**पतंजलिः, सम्पादक– शास्त्री, भार्गव, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, जवाहर नगर, दिल्ली, 1988
10. **सिद्धान्तकौमुदी–**पाण्डेय, उमेश चन्द्र, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
11. **संस्कृत वाड्.मय का बृहद् इतिहास–**उपाध्याय, बलदेव, उ०प्र० संस्कृत संस्थान, लखनऊ
12. **संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास–** पाण्डेय, ओमप्रकाश, उ०प्र० संस्कृत संस्थान, लखनऊ, 1997
13. **संस्कृत व्याकरण का उद्भव एवं विकास–** वर्मा, सत्यकाम, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1991
14. **संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास**–मीमांसक, युधिष्ठिर, रामलाल कपूर ट्रस्ट सोनीपत, हरियाणा, 1994

<u>कोष ग्रन्थ</u>

1– पारिजात कोश –शर्मा, ईश्वरचन्द्र, परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2004

2– शब्दकल्पद्रुम –देव, राजा राधाकान्त चौखम्भा संस्कृत सीरीज, वाराणसी, 1967

3– संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ–शर्मा, द्वारिकाप्रसाद चतुर्वेदी, इलाहाबाद, 1957

4– संस्कृत साहित्य कोश–सेमवाल, श्रीकृष्ण, दिल्ली संस्कृत अकादमी, 1996

5– संस्कृत हिन्दी कोश –आप्टे, वामन शिवराम मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, दिल्ली इलाहाबाद, 1966–69